

श्री श्री चन्द्रमहाशय वनारिषंक विधि

आशा चन्द्रमहाशय
2650 I

ASMA ARCHIVES

169
chandamahā-
roṣana vidhi

ॐ नमः श्री गुरुमहात्म्ये ॥ नमो देहमिमांसाय ॥ नमो वि
द्युक्तिप्रसायथाविधि क्रात्रयित्वा ॥ नदत्तमस्तु ललितेन ॥ मस्तु सः
संस्तुतेन ॥ मस्तु लयनिष्ठा विधिमाह ॥ आदोऽनुमस्तु ललितेन ॥
निसमाविज्ञाययुक्तं नवनडाव ॥ नमो कलगाधितान ॥ गहगमहा
का लादि ॥ नदत्तमस्तु लाभिजासन ॥ ध्ये ॥ जायु ॥ नमोऽस्तु ॥

आन ॥ स्युडदि वदुमस्तु लायनिर्यमिहाद्या ॥ नश्यति हं कालं सत्रः
सिंकलवयन ॥ नमो वामिहि ॥ नमो वीर्य ॥ नमो वनमयि आर्य ॥
अकनिंशुल वयन ॥ नमो वामिहि नशीयदुमहात्राय नमो माययुनना
नहवसिहृष्टा ॥ युष्मादि नृप नविलया ॥ यादार्थयारुणादि कं कुर्या
थन नमो वयन ॥ ॐ वक्तुं कुरुः ॥ ॐ वक्तुं गमनं ॥ यथाकुर्मः समयसह

मादक्याः वरुयुवंगयहं। उं वरु स्फोटव चयवः। उं वरु वरु नाययहं ॥
ॐ यमने शायथा कुर्मः॥ ममयस लमादक्याः यवगल लउमि वयधव धम
वशी कृत्वा नन ४ उं वरु मला नाय नरु दानकाय मग नय त्रि दान यव मका
नाय कृत्वा युनि कृत्वा हा॥ या द्या कर्मन कृत्वा॥ उं वरु मला नाय नमय त्रि
दाने शा सहि ना ग कृत्वा ग कृत्वा उरु वहा ६ गु म कृत्वा ६ धि लानं कृत्वा २ हं कृत्वा

स्वाहा॥ नून ना दक्या युव ग्य व द्वा वशी कृत्वा युव्या दि न म न॥ उं श हं कृत्वा
स्वाहा॥ उं श ४ कृत्वा याय वरु यव्यं यनी कृत्वा हा॥ उं वरु मला नाय नमय त्रि
यव्यं युनि कृत्वा हा॥ उं कृत्वा वरु वरु यव्यं यनी कृत्वा हा॥ उं द्र व वशी वरु
यव्यं यनी कृत्वा हा॥ मय॥ यव्यं दि दि कृत्वा दि न म व न॥ उं द्र नाय वरु य
यव्यं यनी कृत्वा हा॥ उं यी नाय वरु यव्यं यनी कृत्वा कृत्वा ॥ उं वरु नाय वरु यव्यं

ध्यायुनी कृष्णाहा ॥ उं ज्यमाय न वज्रयुष्युनी कृष्णाहा ॥ **नमोऽदिविदिहृदहि**
 नावकुत ॥ उं माहवजीवज्रयुष्युनी कृष्णाहा ॥ उं वेणुनवजीवज्रयुष्युनी
 कृष्णाहा ॥ उं गगवजीवज्रयुष्युनी कृष्णाहा ॥ उं ॐ व्यावजीवज्रयुष्यु
 नी कृष्णाहा ॥ **ॐ आदित्यक्यानादि ॥ ५ ॥** उं सर्वनाथगनसुनलिनविः
 लासनेमिननमाभिहगवज्रहं वहाह ॥ हो नमः ॥ स्ववीवहयुनी कृष्णाहा ॥

लिनाथाहा ॥ **यक्षयहानयुजाफुनि ॥** उं नमः ॥ श्रीवज्रमहाप्रारवनाया ॥ कृष्ण
 वक्षमहाकाट ॥ यक्षयाज्यकनर्जनी ॥ सर्वइक्षनिहकाक्षत्रवलवीव नमोऽस्तुते ॥
मन्त्रमयम ॥ धनवलि ॥ उं नमोऽस्तुते श्रीवज्रमहाप्रारवनाया ॥ दत्तासून
 मन्त्रयुगासनकनायः ॥ सकयमाववलविनासनायः ॥ नमोऽस्तुते ॥
 यन्नमः ॥ कृष्णवलिः ॥ गृह्णन्ममसर्वविद्यान् ॥ हनन्तु मम

नात्रिवात्रयरागासंरागासंरकिउरहिउरनासंरागासंरागासंरकदरहदर
इससत्वात्रमवित्रुदवित्रुकां०रहिंकिउरहंरकुट्कुट्साहा॥ यंअयवा
ययुजाभुति॥ ॥ गतामिचअवन॥ माहानिदु॥ मत्रमनेसाधिसुन॥
उंरहादीहंरु॥ गोमलेराजय॥ गताकुहनास॥ यागनास॥ यंअ
कसमन॥ उंरुंरुं॥ इंदुंरुंसाहा॥ ॥ गतादसकोषयाआदियुसायास॥

यअयहात्रयुजालाभाभुति॥ यमातकमहावात्र॥ यहातक॥ महेत्रवं॥ यमा
तकं॥ महावीत्र॥ विद्यातकनमाहुन॥ त्रवलकायत्राजय॥ गकिवात्रमहाठ
लं॥ मीत्रदहमहावेत्रमहावलसमनन॥ उव्हीषण्यकवहीत्र॥ महेवाजानि
रुहकं॥ कायत्राजनिदिरवागा॥ सर्वविद्युयुगनय॥ वलि॥ उंराहहा॥
हं॥ उव्हीषण्युन॥ यमातक॥ यहातक॥ यमातक॥ विद्यातकं॥ त्रयनठकिकि

नमः निवद लुमहा वनव्य ४। स्यात्रिवात्रव्य ४०३ वत्रिगधय्यं व्यं दी
यं याक नंददाभिः ताग्यमयत्रिवात्रासी युं ०० दं वलिगटक नुखादनुः यिवनु
उहं वंहाः सृष्टकाः ममस्रस्र न्यानायः ॥ नितं वक्रावत्रमगुनिकुवतुहं हं
रुट २ वक्रावत्राश्रास्ययक निष्ठादा ॥ ॥ यक्षयहात्रयुता ॥ नमः वक्रय
जा ॥ सनाकय ॥ गुप्तदना ॥ मनुस्रनियुदकिर्नकात्रय ॥ वक्रयवसन ॥

नमः ४ रुटका वंद आन् ॥ यक्षस ॥ उं रुट ३ ॥ दकिहा २ ॥ उं रुट ३
॥ यन्त्रिमा उं रुट ४ आश्राकट ३ ॥ ॥ उं रुट ॥ उं रुट नरशात्रय २ स्रइना
नः घाटय २ रुट रुट रुट रुट ३ ॥ ॥ नमः दात्रा न्यागय ॥ यन्त्रिमद्वन ॥
उं वक्रावत्राश्राटयस्रमययुवगयहं ०० निमनन दात्रवतुवयउ घायन
॥ नमः दिगवन्ध ॥ उं वक्रमहात्रागमस्रवमात्रा रुटय २ रुट ॥ वक्रदिगम ॥

धामि वस्त्रानमा ला क्वाय ॥ उं स म यं य वि ज्ञे ॥ श्री व तु म हा त्रा य न न म्मे व न द्ध
युगी क्स्वा दा ॥ ॥ न ना म लु ल य ता ॥ यु व्वा दि व रु दि ग म् ॥ दि ग द व ना ॥ स
द व य र्थ नं ॥ ला स्मा दि नृ त्वा ॥ या य ॥ थ न यु व्वा द्वा त्वा हि त्वा ॥ वि द्वा य य ॥ श्री व तु
म हा त्रा य न म्मे व स्त्वा नां स व्वा म्मे य य यु ज्वा गि र्कृ त्वा मि ति वि द्वा य य न ॥ ॥
थ न म लु न न म स्क्वा ल या ड ॥ आ स न स वि ज्ञा य ॥ थ न दि ग व लि ॥ म हा व लि

द ग्गु त्री व लि ॥ स्वा न ना ॥ गु रू य ता ॥ द क्क ल ॥ द ग्गु त्रि स म य ॥ क्क मा य न ॥
॥ न्नि म लु त्रा वि वा स न वि ति ॥ ॥ थ न नि ष्ठा धि वा स न ॥ य था वि धि
॥ ॥ दि क्कि त्रा वि धि थ र्ना ॥ थ न इ न द य य नि ॥ म लु ल थि न
॥ ॥ क न व न ॥ क न गी र्म ॥ या न क म लु ल वा न ॥ स्वा न वा य क ॥ स्वा न वा य वि स र
न या य ॥ थ न गु रू इ हा या व ॥ द व म्क य य या न व न ॥ रु ना यि हा व या व ॥ ध य

त्रयः स्नानकाया उवाडाहामः दवदवीस्यत्रयनः स्नानवीस्यंताभ्यः
धरुवत्रययकं नाथः यूनय्यत्रयंताभ्यः इवियदमत्रयः ऋवाऊनयं यद
किनागाया उयुविजतुरुगवमला मात्रयत्रयंः सर्वसिद्धि सुषयुंदः यत्र
मसुरवारवाजायसिद्धिरुहं वदायसिद्धि सुयुत्माहनः यदकिंमहनाद्याद
नया उस्नानकाया उयुत्रमसुरवारकुमः सुखासयसुल नचिवावित्रासनमिन

नामिरुगवनरुहं वहां इहिरिहिरिहिरिहिरुगनिकुक्सुमाऊलिनाथहं
थन उरुहानना दिगयुजा आवाययवना आकयनादिः यात्रायमनला
उवावस्ववादनमुक्तिः आकाशमत्यादिद्रव्यादनादिनिधनयुवः महाः
वक्रमयमत्यः रुक्मयवमिद्धिमः सुषोममामहासिद्धिः माहं स्वयाधि
देवकः सुववक्रमनाकाः सिद्धिमयनमक्रमः निदायनासुतययिः

सर्वनागान्वागतः तत्त्वनादौ महजवानमहानागमहानगः ४ त्र्यन
उद्धवम्मागुत्तादिमुक्ततथातः समन्तरदः सर्वान्नावाभिसत्त्वयुसिद्धमः
मन्त्रानामहामिद्धिमाहस्ययोगमुदया ॥ मिद्धिवरुमहान्कर्मावरुगवोय
नममः सर्वसत्त्वमनायायिसर्वसत्त्वद्विष्टिनः ॥ सर्वसत्त्वविनाशवकाम
गुंमसयागुनाः यनसत्त्वनसद्धानः बुद्ध्यायाममलुलं ॥ ननसत्त्वनमनाः

यं कामाह्यांयनियुनय ॥ यानिविम्बसमाधर्माः शक्राशुहाक्रनाविता ॥ त्र्यन
अनुरिन्नायाश्चदुक्तमसमन्तरा ॥ नयनातत्त्वनियोगान्निमित्तयन्मलुलं
यनिविम्बसुटंजिह्वासर्वयस्यत्वकन्मया ॥ नमस्कानराडयनिमित्तविश्राय ॥
ॐ नमस्कानराडयवगविमिष्टः ॥ यनसिन्धुमाहानिसावनयायः गुत्तमलुलं
निसमाधिः श्रायः नित्राजनः क्रमायनः शगननस्यनिवकः दवनागुत्तमा

॥ने॥

ज्ञायतुमीनः कथमसदकं धूनडावः गुरुः मानावनिमं विद्याय ॥ नवाहात्रः
 नादिषत्रये ॥ ॥ उं नमः श्रीगुरुमहाशयस्य ३ लक्ष्मणमुनिप्रियमन्त्रये
 नकं वा द्वालिनात्रागताः गुरुनीययाददृष्टव्यहमं ज्ञानमुक्तिप्रियां स्कन्धाय
 यानिमलमाविनिवृत्त्यवगाहयादलिः ॥ स्वगम्यन्तुनायकस्य नवहठय्यस्याव
 लम्बातुव ॥ १ ॥ ध्यानिवनमस्कात्र ॥ नवना ॥ शक्रसहित्रक ॥ गुरुमाना

मन्त्र॥ उं सर्वगयागना नूत्र वी ध्या ल काल वरु यज्ञा मधुसूक्त वरु न सम य हं॥
उं वरु न क हं॥ ॐ नि क क नीयं॥ धन व न वि द्वा वाय का व कु य म व रु ध न
निकान य क या कु य नाय त्रि यि काल व रु क ल म कि मि मि रु न ग उ मि
सा व रु स्व म न ह क ल स व रु स य द्वा रु व॥ धन ल व द्वा य॥ ग य॥
य नु व न न्या दि॥ धन रु व य य॥ उं श्री म न् ४ श्री र व रु म ह न य न ४ श्री अ व व

दि द व द वी ह ता न का य व न म कु म ना य रु व व नि क म्पा द्वा॥ क न का रु न इ वा
कु ॥ ला रु य कि ह्वा मं र वं द र व न रु र्ध का न य ७॥ धन गा म्भु ना दि मि न्द्र न कं
उं श्री य न॥ म न्॥ उं व रु उं श्री म हं द म्पा य न हं रु ट॥ धन रु व य नु न॥ म न्॥ उं
उं व रु रु न्ध य म न य हं॥ धन ले र म यो न म॥ व रु न थि य॥ म न्॥ उं श र व म्भी न हं॥
धन नि का सा धि ह न॥ ०॥ धन यू र्ध द्वा न ह नि य न्ध॥ म न्॥ उं म ह न म ह रु ट

सुनायाहं॥ गगनकमवदीनायकग॥ कल्यांलसूनतयिय॥ **अमहायूयः**
कयनिस्॥ यममज्जवजीवदुमहात्रावनम्यः॥ रायत्रयंगया॥ मलामल्लयानि
कगमवना॥ **निष्यवदन्**॥ शुभमहंमहासुरवतिकल्यानवाका॥ कायाश्रा
गक्रमि॥ **लगुत्सु** महासुरवयाउवपाकलयात्रयानिष्यधूका॥ महामंगत्र॥
कायाश्राववया॥ **गुत्वाय**॥ उंमवयागविक्रमूत्यादमि॥ सुनगमयस्त्रीसिद्धि

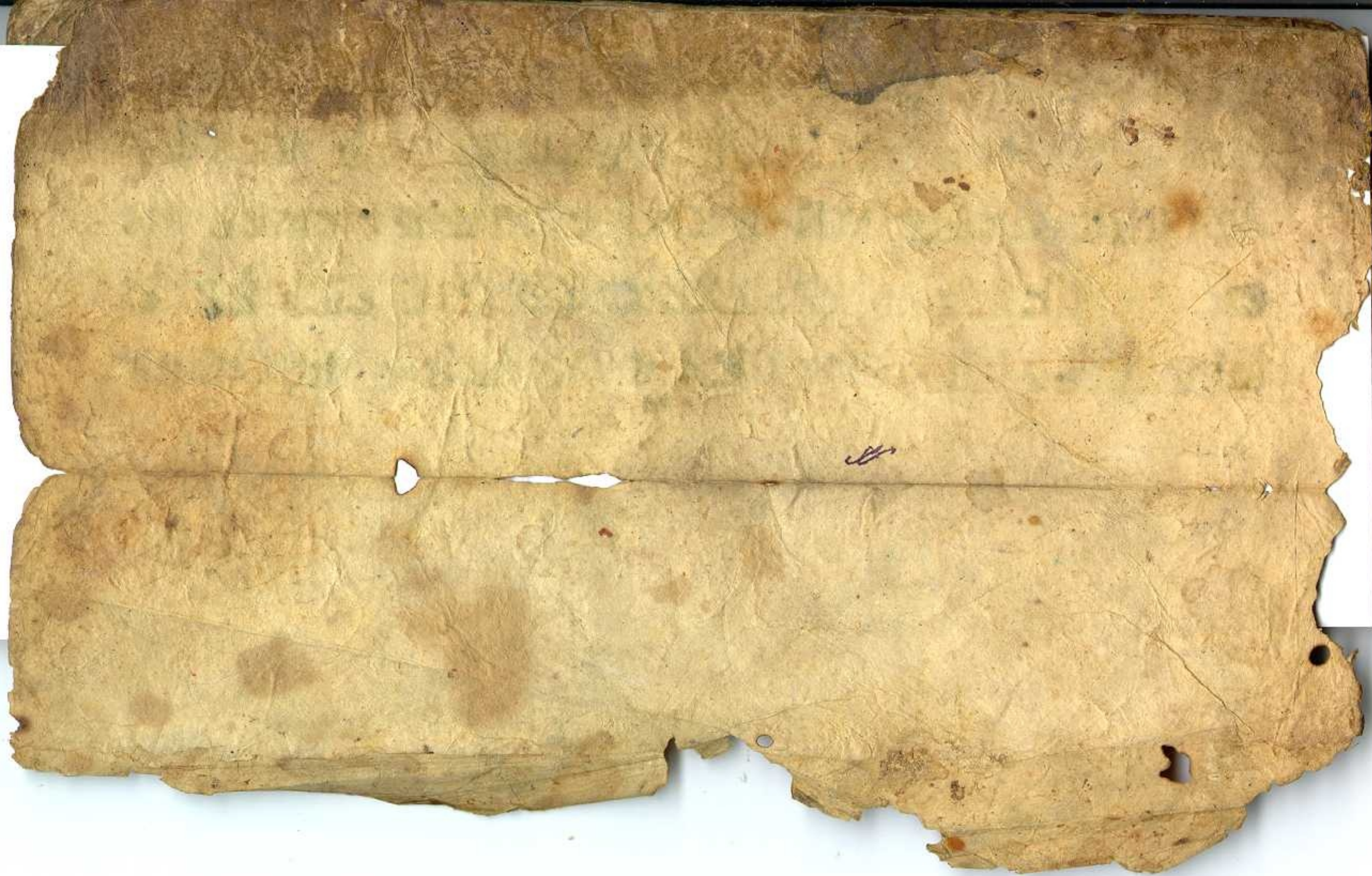
वज्रयथासूरव॥ **यनयकमवदिय**॥ अयत्वंह्वेतथागताधिसिनाहविष्यः
मि॥ नवत्वयदंमव्वेतथागगन॥ यत्रमत्रदृश्यमल्लयविद्यायवकव॥ नवागुहा
नवमिनि॥ **त्रनिष्यस**॥ यनिष्यमा॥ समस्तनथागतमनकुयिपकनअधि
हानयायुवहुना॥ समस्तनथागतमनः॥ रायत्रयंगयाजीवदुमहात्रावन
यामलामल्लयः॥ अमल्लयानवावः॥ अहियकमलाकक्रयाउवनः॥

यकाशयादखझायमनवः० हनौक्यिंरुनसनां० नृमहाइयमनवः० ग
द्वमकशुमावरय॥ धनमल्लुलउगयन्य॥ ॥ मागुनवाहासाव॥ उं नृककाव
लहंरुटाउं नृखविनहं॥ ॥ उंमहासूत्रनेमृदसूनाथीसूस्ववावरुसह्यायमि
श्रीमा॥ धनमल्लुलठायाक॥ गीनहंकावमंजाना॥ गुत्रुनृयाया॥ नदनृयवृद्धा
त्रयमल्लुलयाह्याय॥ ॥ यंथयल्लमकात्रयन॥ मध॥ उं कृष्णवल्लयजायह्या

नायात्मानंनिर्यातयामि० सर्वगतगगनादिवरुकृष्णवादिनिश्चयमां॥ समस्तुशात्र
धियानिलकृष्णवल्ल० य्जायाय० निमिनिमिन्नृत्तागवीत्रयया० नृदाहात्रया० समस्त
गतगगनादिनः० वरुकृष्णवल्लनः० उं नृधिहानयाडः० यमल्लइयमात्र॥ १॥ य्द्व॥
उं नृवावल्लय्जायह्यानायात्मायातयामि॥ सर्वगतगगनादिवरुह्यगावल्लानिह्यमां॥
यत्रमम्वनः० ह्यगावल्लय्जायायनिमिनिमिनः० उं नृमवीत्रदाहात्रया० वरुह्यगावल्ल

नः ऊरुधिसिद्धानयाठः यमसंशयमात्र ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ उं वीणावल्लय्हायस्त्रिना
यात्रानंनिर्यागयामि । सर्वतथागनादि वीणावल्लयिष्टिदमां ॥ यत्रमन्त्रवदक्षि
लादिगयाः वीणावल्लयः ऊरुधिसिद्धकया उं यमसंशयमात्र ॥ ३ ॥ यश्चिम ॥ उं क
वल्लय्हायस्त्रिनायात्रानंनिर्यागयामिः सर्वतथागनादिः वकावल्लयमयवक्तुय
मां ॥ वकावल्लय यहायायः निमित्तेनः किनह्योत्रादिनदाहात्रया ॥

यत्र मञ्चवत् - वदत स खत्रका वत्रसनः - ऊक वमवकत्रययकं - यमनहयमा
 त्र ॥ १ ॥ उक्तं ॥ अथमात्रलयुक्ताय ह्यनायासान्निर्यातयामि - सर्वेनथागताः -
 अथमात्रलस्यमात्रमात्र ॥ यत्र मञ्चवत् अथमात्रलयुक्ताय निमित्तकनः - जनगत्रिव
 दाहत्रयाः अथमात्रलसनः - ऊकस्यमात्रयुक्तमहयमात्र ॥ २ ॥ अत्रुक्तं ॥
 उक्तं ननु यत्रलनाय ह्यनायासान्निर्यातयामि ॥ सर्वे सखयत्रिता सार्थः मात्रा



ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ਆਖਿਆ ਮਹਾਰਾਜ

2650 I

ASIAN ARCHIVES

नः ॥ यमदा मल्ल स्यात् ॥ अरिष्टे कमत्रा कक्रयाकः युका जया उं खदाय
मनदः गथ गुत्र स क दार्थं गुक या न सा सिदि इयुव ॥ उं निमि वरुं ॥
गुत्र स वद ॥ अय क समया वरु मूला न कल लय ॥ यदि त्व क सयि व कया ॥
॥ **त्रिभिः** ॥ अमा समय कया वरु नः ॥ अदि स नया नाः ॥ अ व ल्य थ या रव यु
का जया कामा ॥ व स या न न ल ह्यः ॥ श्री वरु स त्या य दा वि द्या युवः ॥ थ नि या

निमि क न स्या द व नः ॥ य का ज या य म न द ॥ द द य क उं ॥ वरु स त्व स यं
क द द द य स म व रि नः ॥ नि रि द न क हं या या न यदि क या दि म न यं ॥ **त्रिभिः**
यत्र म ज्व त वरु स त्व र व मा ॥ क स म य स न द ट इ व ल व यं ॥ स यं थ म थ थ मं क द
द य स वि द्या ना ॥ थ या र व यु का ज या ना मा ॥ नू ग्व त न ल ह्यः ॥ यि दा वि द्या युवः
थ नि या नि मि क न गु ह गु क या य मा न ॥ थ न यं क म र ता न कं न ॥ अ य न ना

नकावात्रिः समयातिक्रमादहं ॥ समयसंज्ञकसिद्धिदिववहाम्नादकं ॥
लाक्षिधाम् ॥ श्रमाकयतिस्फुटिविद्यानत्रकयावात्रिः गथननत्रकयावात्रिः
नः कुवसुधमकं ॥ अनथयायुः युकाशयागमाः ॥ श्रमावसुनककाशजीवः
मायद्वयः ॥ यवसुयकाशमयागमाः ॥ श्रमनवसु ॥ नानक ॥ धनगुणवदं
॥ श्रमनवाहंवरुयानियदहं नैक्यामिदं वृत्तः ॥ ननः ॥ स्वयं वृत्तनवया

हंसनयोमाननविषमयत्रिहात्रकियाकालंकत्वाः ॥ नत्रकयननंस्या ॥ लाजि
व्यम ॥ धनुमात्रसिः ॥ कुनलमयैः ॥ गथवदसत्यज्ञः ॥ श्रथंवरुसत्यलात्रयस्व
नः ॥ गथगुणनश्रादगश्रथं गुण्याखडनमात्रः ॥ गुणश्रयमानयायमवेदः
गुणदृष्टवयायकमनवः ॥ गुणत्रादृष्टवयायकनमाः ॥ श्रवस्यः ॥ श्रयमाननमृ
सुहृयुवः ॥ नत्रकसयनहृयुवः ॥ धनिनिमिक्तिनः ॥ गुण्याश्रादालंघनयाय

मनवः दिनसायात्रगुर्ववदुनायायमात्रः यथमदुनसादिनकयात्रवदु
नायायमात्रः ॥ ॐ निसमयादकदान ॥ यनयवदान ॥ उं शुनानाननेत्रः ॥ अका
त्रसिचर्यनिष्ठाद्यः सवेनथागताश्चमिष्टिर्वाः वरुसत्यमत्राविमनु॥
यनन्यासयाय ॥ उं ददिलहः सिप्रनिवहः कहुयत्राः यादयात्ररः यध
यादया ॥ गीममहः सकाल ॥ उं न्रावजयं ह्यारययत्रत्रवालयवात्र

++-++

यहं ह ४ अटं ४ ॐ निसमनेनः सकसात्रयवकयन ॥ अथवाशीयदुमहाला
खनत्र्यागुर्गुं निस्यशीयदुमहालाखनात्मानंः ददिलहनाकालिः वामकनम
द्यधवादन ॥ ॥ उं निसवजुमहाकाधजयहं ॥ श्रीवदुमहालायधायः
विमहविद्याकयः धामहस्याहा ॥ ॥ कनवमवसत्यार्थः मिहिटुत्यायथानूमा
गदधं वदुविषयेहं ह अटं मूत्रनिविमहयन ॥ ॐ निसवमविधि ॥

धनमगच्छय्या डावकन ॥ गुन्नायकन ॥ हसिष्यवक्ष्यमर्कः हसिष्य
 नि। किंयस्यसिचः निनयीनः नकः, ज्ञामः, दक्षायतामा यथाक्रमं ज्ञानि
 यस्ति, वस्यहियावः मात्रमः सिद्धिरुवनाया न ॥ रुद्रं ॥ निययनानियुद
 क्रमाकात्रयेन ॥ ॥ ॐ ययंभक्तुसंममयासिष्यायुयजिनः ॥ यथायस्य
 तथास्यसुदवनानादुलकम ॥ यादृकसिद्धिरुवनाया न ॥ ॐ ययंभक्तुसंममयासिष्यायुयजिनः ॥

यादृक् न्यान्नावनः नादृक् स्यात्सुखमलं सा न्ययटसिध्ययवगाविमि ॥
 धनय्यया ननयायक ॥ मन्त ॥ उं निरुवउटा मन्तः ॥ ॐ नो मन्तवद्वयं
 मसिद्धिनिरुसुधामिद्धिम्ययुक्कुरुंरुहहोश्रा ४ रं वीनहंयनिकुक्कसमा ३
 मन्तनायदा ४ ॥ उं न्ना रववीनहं । श्रीवदुलमहोत्रावनांवरुय्यम्युनीकुरुं ॥
 जिमय्ययक ॥ मन्त ॥ उं युनिगटद्वलमिममन्तः मन्तवन्नि ॥ ॐ निमाला

लिखक विधि ॥ ० ॥ नदन जिह्वा मृदादि वद धिय निलला न वदं न वदयं संका
यी वल य । वरु सत्य स्य यं न य यरु ल्या न न ल्य न ४ उ द्या टय नि स द्वा का वरु यरु न
नरु न ४ ॥ **न जिह्वा म** ॥ य व म स्य व वरु स ल्य स्यं स्य यं थ म थ य म वि आ हा व
कृ पा य वरु उ ल्या न न या ना ॥ आ व व मा य न्य यरु रू ना ॥ वरु व न्ना त्रि का य ॥
वजन धि म ॥ उं ह्ना न वरु रू स्या हा ॥ ह व रू य म् ॥ ० दं न म ० लं य म् न ह्ना

व ल न स य नि । ल य रू व रू कृ ल रू ना ॥ मृ दा म न्नु व धि सि नं ४ स य दा स द्वा सि द्वा नां
स या ल्मा रू वि च्छ सि । वरु य आ ग ल लि नं म न्नु य्वा ना ध नं द्वा ॥ **न जिह्वा म** ॥ थ म
लु ल द र्ज न या व ॥ कृ रू न स ना ॥ न थ ग न या कृ ल स रू ना रू ना ॥ मृ दा नं म न्नु नं ॥
वि ह्ना न या ना ॥ स म रू सि दि सं य द ना ना । ह्ना न या ल य रू ना ॥ य द्वा य न ल्य स य ॥
म न्नु स रू ना ध न या ह्ना न ॥ **निष्ठा वा व** ॥ उ ना वरु म लु लं म ह्ना म लु लं य वि द्वा हं ॥

यागमल्लंमल्लमल्ललदनिनाहं ॥ गुह्यमल्लमल्ललदिदिनाहं ॥ मल्लमल्लमल्लमल्ल
मल्ल ॥ युनिमादमल्लमल्लमल्ल ॥ गुह्यमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ निमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल
॥ धनगुह्यमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ नमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ ॥
वाधिवरुनवृद्धानाः यथादकामल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥
लगुह्यमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥

यायनिमिनिन ॥ कल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ ॥
वृद्धानामल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ गुह्यमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥
दि ॥ लगुह्यमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥
गुह्यमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥
मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥ मल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्लमल्ल ॥

हिनस्यस्योभक्तस्यः यत्र सर्वकुत्रापि यकस्यानिःश्वसत्यरुनकस्यमहासुखस्य
नमगलं वदन् यत्र माहिष्यकः ॥ **अनिष्यसः** ॥ यत्र मः यत्र वरुसुखमाः ॥ सम
सुखस्य हृदयस्य विज्ञातः ॥ समसुखाः ॥ आत्मासुखस्यः ॥ समसुखलयाः ॥ अविद्युनिव
समसुखस्यारुनकवदः ॥ सदा सर्वदामहासुखज्ञानद्वयाऽविज्ञातः ॥ यथिऽक वरु
सत्ययाः ॥ अत्र सुखमगलं वदन् यत्र कुयनिसुखयामंगलं वदन् ॥ ॐ वरुसुखाहिष्य

कः ॥ त्वामहिष्यस्यमिः ॥ सर्वदामहासुखज्ञानद्वयाऽविज्ञातः ॥ यथिऽक वरुसुखाहिष्य
रुनकमदः ॥ ददामिसुखद्वानाः ॥ निगुञ्जात्रयमंदराः ॥ **अनिष्यसः** ॥ महासुखवरु
सुखयाः ॥ अहिष्यककुयनिसुखस्य हृदयस्य विज्ञातः ॥ समसुखनथागतयाः ॥ अविद्युनिव
त्रयं दृष्टुं यत्र यत्र मात्रः ॥ अहिष्यकयाऽऽः ॥ समसुखनथागतयाऽविज्ञातः ॥ नैलाकसन
नमसुखात्रयाऽऽः ॥ समसुखनथागतयाः ॥ कायवाक्यद्विगतः ॥ वीरुनयः ॥ अमराव

सुः धधिग्वत्राष्टककनवियाः । उं कां ४ हं वडादकाहियाक सुसुनगम्यं स
ह॥ ॐ निउदकाहियकविधि॥ धनमकुटाहियकविधि॥ ० दं नसर्ववृद्धा लं
युष्माकं यज्ञनायय । मकुटयकुटयोरुव । सर्ववृद्धयुजममिमहामकुटयमि
कस्याह॥ ॥ उं वज्रमनस्ययी श्रुतिविधिसुमां ॥ उं सत्त्ववती श्रुतिविध
ह॥ उं सत्त्ववती श्रुतिविध ४॥ नजिह्याम॥ धमकुटयः समस्तनयग
नयास्युयः कयनिसकलपुत्राय यज्ञाय यायनिमित्तनः मकुटाहियाक

वियाः धमकुटयः श्रावणावनं श्रादिनयकुटया कुलसुतयकिरुवः स
सुसुदुदयायुजमनिः धधिग्वमकुटाहियकाविया ॥ कुमलं रवनदासम
कुटत्रिकाया ॥ मन्त्र ॥ उं वदमहालावना श्राविम २ श्राहदयहं द॥
ॐ निमकुटाहियकविधि॥ धनमकुटाहियकविधि॥ निमसकुटयजयना॥
उं हं तां दी रवं ॐ निमकुटललाटयवावधिया ॥ ॐ निमनाकाहियकविधि॥
नारायणरक्ताहियाकंदया ॥ लाहादिमयं रवं ॥ नस्यदकिमहमदला उं ह

न नारायणः ॥ १ ॥ कथं दत्तं ॥ तस्मात्तु मम ॥ २ ॥ तस्मात्तु मम ॥ ३ ॥ तस्मात्तु मम ॥ ४ ॥ तस्मात्तु मम ॥ ५ ॥

नरमात्रय रसवत्तु नृणां नखरुं दृढं ॥ **लाजिष्यम** ॥ धारयन्तु नृणां नखरुं दृढं ॥
रुमिवाहस्य प्रथमः ॥ धारयन्तु नृणां नखरुं दृढं ॥ समस्तं नृणां नखरुं दृढं ॥
निमित्तं नृणां नखरुं दृढं ॥ **ॐ नृणां नखरुं दृढं** ॥ कलत्रं नृणां नखरुं दृढं ॥
कावयः ॥ मन्तु ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥ वधरं नृणां नखरुं दृढं ॥
नृणां नखरुं दृढं ॥ **ॐ नृणां नखरुं दृढं** ॥ ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ निमित्तं नृणां नखरुं दृढं ॥
लसदयाय नृणां नखरुं दृढं ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥

लाजिष्यम ॥ रवयः नृणां नखरुं दृढं ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥

रुं दृढं ॥ **लाजिष्यम** ॥ धनिरयमायत्र मन्त्रं नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥
रुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥
संनमयुहिर्दृढं ॥ **ॐ नृणां नखरुं दृढं** ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥
मन्त्रं नृणां नखरुं दृढं ॥ ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥
यदमहादवीयुः नृणां नखरुं दृढं ॥ **सिन्धुमन्त्रं नृणां नखरुं दृढं** ॥ मन्तु ॥ ॐ नृणां नखरुं दृढं ॥
धनिरयमायत्र मन्त्रं नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥ नृणां नखरुं दृढं ॥

निन्नाविमरश्म्यादुदयहंरुट् ॥ त्रिष्वक ॥ ॐ निमिद्र्याह्रिष्वक ॥ ० ॥
नगुल्लाह्रिदिमयककिः नस्यादकिमहमदशा ॥ मनु ॥ उं कनिके ४ सर्वमा
नामं मासं कर्कय रहुट् ॥ लाजिष्याम ॥ समस्तसुकरयनिहावत्रुलवकंदना
यं ॥ मयक निमिद्र्याह्रिष्वक विषय ॥ ॐ निमिद्र्याह्रिष्वक विषय ॥
नदनकयालाह्रिष्वक ॥ तामहमनवयानः दद्यादिदृमावा दद्यात् ॥ मनु ॥

उं वरुकाया लसर्वसुखं त्रकाशत्रय रहुट् ॥ लाजिष्याम ॥ समस्तसुकरयनि
मः त्रकाशत्रया इत्यर्थः ॥ अथ कयालाह्रिष्वक विषय ॥ अथानुकरकाह्रिष्वकः ॥ सर्व
सत्यद्वयत्रकायाय निमिद्र्याह्रिष्वक विषय ॥ त्रिष्वकयादि ॥ ॐ नि
कयात्राह्रिष्वक विषय ॥ ० ॥ ननादवीनां नामाह्रिष्वक ॥ हगवन्वा ४ मृदयायव
व्यः नदाकात्रवतालम्बा ॥ उं हृष्टी द्वयवकिनाम ह्रा ल्य हंरुट् ॥ लाजिष्याम ॥

श्रावणमा. कृष्णादिद्वन्द्वेन्दन. श्रुत्यनुत्यागामइ. दवीसनामारिषेककृतवि
 या॥ श्रिषयादि॥ ०. निदवीनामारिषेकविधि॥ ०॥ गनागिष्यकृणा
 लिनात्वषीन्॥ गुणवद्गातायांलिषेकं. मङ्गदहि. कृतानि. त्यास्यप्रार्थ
 समर्थस्यायीनाहंल्यसादन॥ ०. वद्गातायांलिषेकविधयुसत्त्व
 श्रयमात्र. कृतयात्रानियावन. श्रावण्यालिषेकत्रायसु. यवगन्धन

खदः यनार्थश्चनखदः कुत्रया लयायुमादनः वक्राया योहियकः विमयस
 त्तइयमात्र ॥ **उक्ताव ॥** वक्रहं वक्रसत्यत्रयध्यात्वा ॥ श्रुतादिनिधनसत्यः
 वक्रसत्यमहाप्रज्ञः समन्तहृदमर्शात्मा वक्रहोयनि ४ युनि ४ ॥ यत्रमाश्रयत्रयार
 गत्रानुमिति ॥ धनियत्रयावक्रविविध ॥ **शोभित्यास ॥** आदिनाः श्रुताः वक्रन
 यमसत्यममात्र ॥ ध्यायं वक्रसत्यमकलहिनं ॥ द्यान्मानहुनः ॥ अर्थिग्ववताहियककु

ब्राह्मणं कथादि ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ वरुणं नमस्यते ॥ उभयानां हि नव
स्वाहा ॥ ॐ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
सादिकाः स्वस्ते वरुणसमायागाः ॥ आचार्यमस्तु नमः ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
वृणीतो वृणी ॥ यदास्ते आलिंगलयन्तयास्तदा व ॥ यदा व उयाय व समा ॥ यद्विषा यम
आयम्या हिष्यद्वै ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
हृद ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥

आशा बलः ॥ कुरु कुरु यदुभयं न कुरुयमात्रं ॥ ॥ गृहिणां हि प्रियाय न कुरुयि
मनिहिता व ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
शिवि यशसा ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥
॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥ ॥ धनं कुरुवात्र प्रियाय ॥